अहमद दब्बाग

यूके अकेडेमी ऑफ़ इस्लामिक साइंसेस के अध्यक्ष
और वाइज लाइफ अकेडेमी के प्रधान अध्यायक हैं

zawiyah.org | prophetic-path.com | facebook.com/ShaykhAhmadDabbagh

Hindi

सूची

२ **जीवनी**
इतिहास, शिक्षा और योग्यता

५ **विदेशी यात्राएं**
दावत के मुबारक काम के लिए कई विदेशी यात्राएं हुईं

६ **कॉन्फ्रेंसें**
अनेक की गई कॉन्फ्रेंसों की सूची

८ **संस्थाओं का एक संक्षिप्त विवरण**
अहमद दब्बाग की निगरानी में चलने वाली भिन्न भिन्न संस्थाओं पर एक नजर

९ **तरीका मुहम्मदिया**
जीवन में परिवर्तन लाने वाले तज़किया नफ्स के कोर्स का सारांश

१० **वाइज लाइफ अकेडेमी**
अनेक छोटे छोटे कोर्स जिन से आप को जीवन की समस्याओं का सामना करने में सहायता मिले गी जैसे शादी आदि

१२ **दब्बाग वेलफेयर ट्रस्ट**
तरीका मुहम्मदिया का दान संगठन

१३ **यूके अकेडेमी ऑफ़ इस्लामिक साइंसेस**
जरूरी इस्लामिक जानकारी देने वाले कोर्स

१४ **अनदेखे को बेनक़ाब करना**
हर एक को अनदेखी दुनिया का अनुभव कराने के लिए तैयार करना

१६ **परामर्श सेवा देना और तैयार करना**
सच्ची व्यक्तिगत सलाह देना और मार्गदर्शन समझाना

१७ **मुफ्त रूहानी इलाज के सेशन**
एक मुफ्त सेवा जिस का लक्ष्य है कि शारीरिक, मानसिक, अलौकिक रोगों को पैग़म्बर की बताई शिक्षाओं के द्वारा इलाज किया जाए।

१८ **अहमद दब्बाग़ द्वारा लिखित पुस्तकें**

जीवनी

परिवारिवारिक इतिहास

ताबिईन में इमाम हसन अल बसरी قدس سره العزيز बहुत बड़े आलिम और नेक व्यक्ति गुजरे हैं जिन्हों ने पैग़म्बर मुहम्मद صلى الله عليه وسلم के अनेक बड़े सहाबा से दीन सीखा था। उन्ही की संतानों में से अनेक लोगों ने कश्मीर हिजरत की ताकि इस्लाम फैलाया जाए। वहीं पर उन लोगों ने शैख़ बहाउद्दीन ज़करियाह मुल्तानी सुहरवर्दी قدس سره العزيز की संगत की जिन्हों ने फिर उन को आदेश दिया कि खारियां गुजरात के पास पंजाब प्रांत हिजरत कर लें। उन का मुबारक नाम शैख़ खैरुद्दीन औलिया قدس سره العزيز था जिन्हों ने इस जगह का नाम "हक़ीक़त" रखा था जिस का अर्थ है "परम सत्य"। इन लोगों ने ८ वीं शताब्दी में इस क्षेत्र में इस्लाम का प्रचार किया और उन के हाथों हजारों लोग इस्लाम ले आए थे। अहमद दब्बाग उन्ही की संतानों में से हैं और वह अपने मातृ गांव समन्दर पाकिस्तान में पैदा हुए थे। ५ वर्ष की उम्र में वह डेन्मार्क चले गए थे और अपनी नर्सरी की शिक्षा वहीं इसहोज में प्राप्त की थी।

प्रारंभिक शिक्षा

उन्हों ने ६ वर्ष की उम्र में क़ुरआन सीखा और उस के बाद उन्हों ने क़ुरआन हिफ़्ज़ (याद) करना शुरू किया। इस के बाद उन्हों ने ७ वर्ष लगाए और इस्लामी ज्ञान प्राप्त किया। इस लक्ष्य के लिए उन्हों ने कई वर्ष पाकिस्तान और यूके में बिताए। वह इराक, सीरिया और मोरक्को भी जा चुके हैं। अहमद दब्बाग यह नहीं कहते कि वह आलिम हैं लेकिन तफ़्सीर, हदीस, फ़िक़्ह, और तज़कियाह की शिक्षा देने के लिए उन को कई प्रमाणपत्र मिल रखे हैं। उन्हों भिन्न भिन्न विषयों पर कई पुस्तकें भी लिखी हैं जिन का फिर कई भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

सांसारिक शिक्षा

सांसारिक शिक्षा में उन्हों ने सेलफोर्ड यूनिवर्सिटी से पोस्ट-ग्रेजुएट किया और यूनिवर्सिटी ऑफ़ लंकाशायर से ऐम.बी.ए किया। इस के अलावा उन्हों ने अनेक क्षेत्रों में अपनी सेवाएं भी दीं जैसे वित्त, विपणन, जेल और पुलिस के साथ काम करने की ट्रेनिंग भी ली।

शिक्षण संस्थाएं

पिछले कुछ वर्षों में उन्हों ने अनेक संस्थाएं, इल्मी हल्क़े, ज़िक्र के हल्क़े, और यूके, पाकिस्तान, कनाडा, बांग्लादेश, अमेरिका और मोरक्को में अकेडमी संस्थाएं भी बनाई हैं।

मानवता की सेवा

अहमद दब्बाग का काम रूह का तज़कियाह और आत्मविकास पर केंद्रित है जिस का लक्ष्य है कि मानवता को सब नकारात्मक विचारों, कामों, भावनाओं, और अनैतिकता से बचाया जा सके और उन में सकारात्मक विचारों, कामों, भावनाओं, और नैतिकता की उमंग पैदा की जा सके। यह काम तरीका मुहम्मदिया (नबी का काम) कहलाता है। इस के बाद खोजकर्ता को परमशांति के स्तर तक ले जाया जाता है जिस के बाद पुरुष या महिला में से कोई भी व्यक्ति अपने रब के साथ एक सुंदर नाता बना लेता है।

तज़्कियाह का यह तरीका क़ुरआन, सुन्नत, अहले बैत की समज, सहाबा जिन में सय्येदुना अली बिन अभी तालिब رضی الله عنه, सय्येदुना इमाम हसन رضی الله عنه, सय्येदुना इमाम हुसैन رضی الله عنه शामिल हैं, इस के अलावा इमाम ज़ैनुलआबिदीन رضی الله عنه , इमाम हसन बसरी قدس سره العزيز, सय्येदुना अब्दुल क़ादिर जीलानी قدس سره العزيز, सय्येदुना इमाम अबुल हसन शादहिली قدس سره العزيز, और उम्मी बुजुर्ग सय्येदुना अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग رحمه الله के तरीकों पर निर्भर करता है। हज़रत ने क़ादरिया, शदिलीयाह, रिफाइयाह, सुहरवर्दियाह, चिश्तियाह, और नक़्शबन्दियाह जैसे रूहानी तरीकों पर इजाज़ा (प्रमाणपत्र) रखते हैं।

यात्राएं

अहमद दब्बाग साल में ७ महीने ज़्यादातर यात्रा कर रहे होते हैं, कनाडा से मलेशिया और इंडोनेशिया के अधिक पूर्व तक वह गांव देहात के सादा लोगों से ले कर यूनिवर्सिटी और सरकारी अधिकारियों तक के अपनी शिक्षाओं को पहुंचाते हैं।

समाज कल्याण

मानवता की कठिनाइयों और माली पीड़ा को ख़तम करने के लिए उन्हों ने दब्बाग वेलफेयर ट्रस्ट की स्थापना की जिस के माध्यम से कई देशों में ज़रूरतमंद और ग़रीब लोगों की सहायता की जाती है।

अक़ीदा (मत) और विचारधारा

हज़रत अहले सुन्नत वल जमात से संबंधित हैं और अहले बैत से बहुत मुहब्बत करने वाले हैं। वह हनफ़ी फ़िक़्ह का पालन करते हैं और सब इमामों का आदर करते हैं। वह खुद औलिया और नेक लोगों के मार्ग पर चलते हैं और शरीयत और सुन्नत का पूरा पूरा पालन करते हैं।

पारिवारिक जीवन

वह विवाहित हैं और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मैनचेस्टर यूके में रहते हैं।

शिक्षा

इस्लामी शिक्षा

१९७५ - १९८९ अक़ीदा (मत) :
इमाम अबू मातुरीदी رحمه الله का प्रमाणपत्र

फ़िक़्ह : इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله का प्रमाणपत्र

हदीस : हदीस की छे किताबों में इजाज़ा, सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, अबू दाऊद, निसाई, तिर्मिज़ी और इब्न माजा

तज़्कियाह: सय्येदुना अब्दुल क़ादिर जीलानी رحمه الله का प्रमाणपत्र

सीराह, दीन के सिद्धांत और क़ुरआन हिफ़्ज़ करने का प्रमाणपत्र

सांसारिक शिक्षा

ऐम.बी.ऐ और डी.बी.ऐ

१९९० - १९९५
सेलफोर्ड यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ़ सेंट्रल लंकाशायर

बी.टेक बिज़नेस और फ़ाइनेंस का पहला डिप्लोमा

बी.टेक बिज़नेस और फ़ाइनेंस का राष्ट्रीय डिप्लोमा

बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा

सार्वजनिक सेवाओं में डी.पी.ऐस.आई डिप्लोमा

१९९५ - अनेक संस्थाओं में काम किया

भाषाएं सिखाना (अंग्रेजी, उर्दू, अरबी)

विदेशी यात्राएं

उत्तरी अमेरिका	कनाडा, अमेरिका
अफ्रीका	मिस्र, मोरक्को, सेनेगल, दक्षिणी अफ्रीका, तंजानिया
यूरोप	डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड, इटली, नॉर्वे, स्पेन, स्वीडन, तुर्की
दक्षिणी अमेरिका	गुयाना, ट्रिनिडाड, टोबैगो, वेस्ट इंडीज
एशिया और मध्य पूर्व	बहरेन, बांग्लादेश, इराक, भारत, इंडोनेशिया, ब्रुनेई राज्य, मलेशिया, फिलिस्तीन, पाकिस्तान, सऊदी अरब, सिंगापुर, श्रीलंका

भाग ली गई कांफ्रेंसें

इंटर्नेशनल सूफी कांफ्रेंस, फास, मोरक्को

इंटर्नेशनल कांफ्रेंस ऑफ़ इस्लामिक स्पिरिचुएलिटी, तोबा, सेनेगल

लाइफ एंड टीचिंगस ऑफ़ इमाम ज़ैनुलआबिदीन - इराक

इंटर्नेशनल टीचरस कांफ्रेंस, लाहौर, पाकिस्तान

भाग ली गई कांफ्रेंसें

वर्ल्ड शहादा कांफ्रेंस, लाहौर, मलेशिया

इंटर्नेशनल कांफ्रेंस, इंडोनेशिया

सुन्नी कांफ्रेंस, इंग्लैंड

इंटर्नेशनल कांफ्रेंस, तुर्की

इस के अलावा:
येल यूनिवर्सिटी, अमेरीका
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैनचेस्टर, यूके

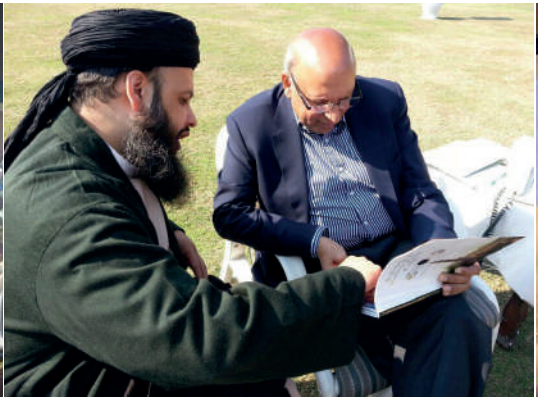

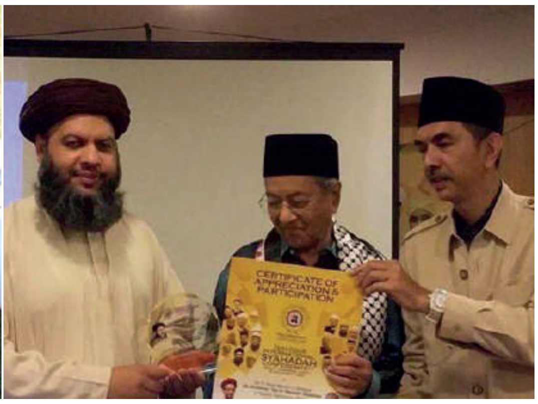

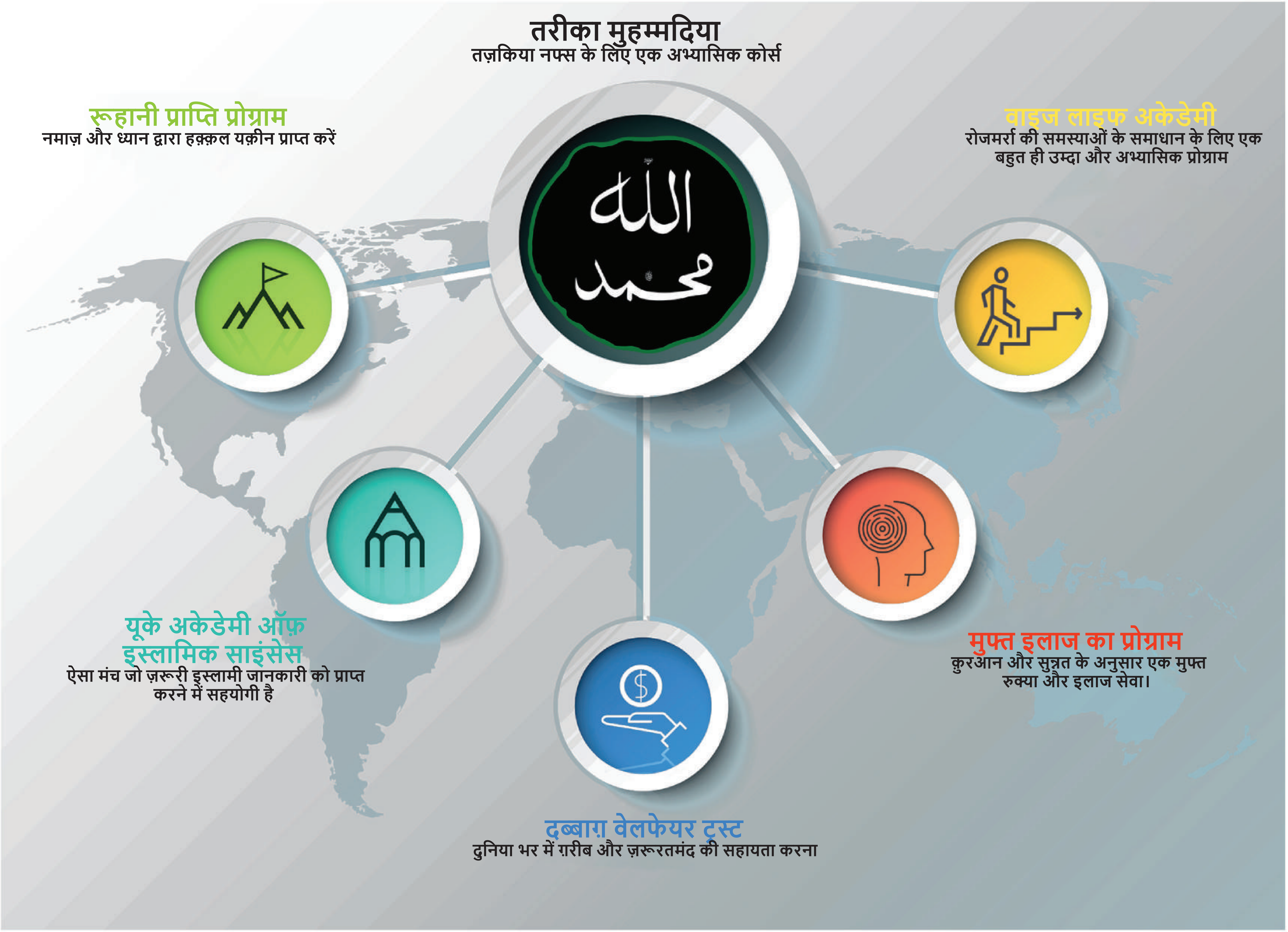
तरीका मुहम्मदिया
तज़किया नफ्स के लिए एक अभ्यासिक कोर्स
الله
محمد
रूहानी प्राप्ति प्रोग्राम
नमाज़ और ध्यान द्वारा हक़्क़ुल यक़ीन प्राप्त करें
वाइज लाइफ अकेडेमी
रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिए एक बहुत ही उम्दा और अभ्यासिक प्रोग्राम
यूके अकेडेमी ऑफ़ इस्लामिक साइंसेस
ऐसा मंच जो ज़रूरी इस्लामी जानकारी को प्राप्त करने में सहयोगी है
मुफ्त इलाज का प्रोग्राम
क़ुरआन और सुन्नत के अनुसार एक मुफ्त रुक्या और इलाज सेवा।
दब्बाग़ वेलफेयर ट्रस्ट
दुनिया भर में ग़रीब और ज़रूरतमंद की सहायता करना

तरीका मुहम्मदिया

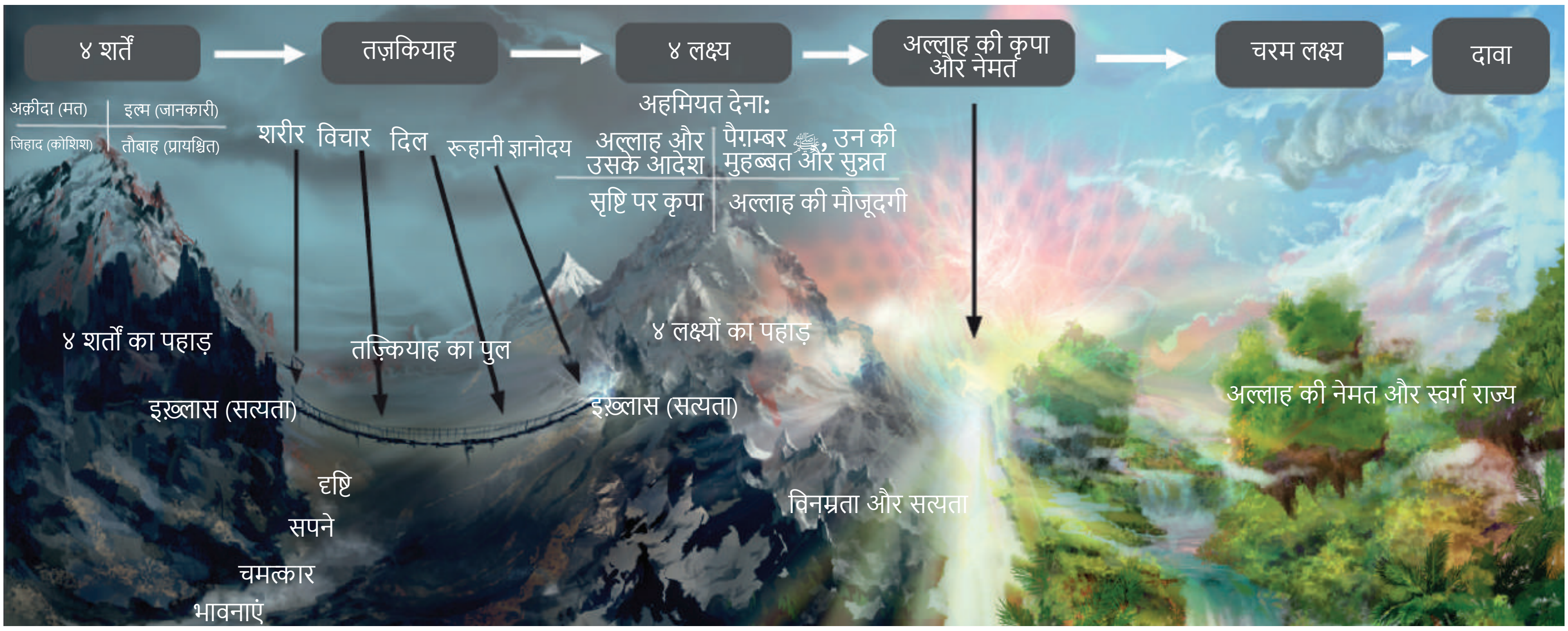

अल्लाह ताला ने अपने नबी صلى الله عليه وسلم को भेजा ताकि वह मानवता को सिखाएं कि कैसे अल्लाह की इबादत में जीवन को बिताना चाहिए, और कैसे अल्लाह की सहमति प्राप्त करनी चाहिए। तरीका मुहम्मदिया तज़्कियाह का एक ऐसा ही कोर्स है जो इस लक्ष्य को पाने में सहायता करता है।

अल्लाह को राज़ी करने के लिए ये चार गुण विकसित करने हों गे:

१. अल्लाह ﷻ को अहमियत देना

२. अल्लाह के नबी صلى الله عليه وسلم को अहमियत देना

३. सृष्टि पर कृपा

४. हर समय अल्लाह का ध्यान रहना और तज़्कियाह के चार चरण

१. शरीर की सफाई

अपने शरीर के अंगों को ज़ुबान, कान, आंख, हाथ, पांव, पेट, और निजी अंगों के पापों से बचाना।

२. विचारों की सफाई

अपने दिल और दिमाग को बुरे विचारों से बचाना और इस के बदले में अच्छे और सच्चे विचारों को सोच में लाना और अल्लाह की मौजूदगी का ध्यान करना।

३. दिल और रूह की सफाई

दिल को बुरे गुणों से पाक करना जैसे जलना, नफरत करना, दिखावा करना, और अहंकार आदि फिर अपने आप में अच्छे गुणों को पैदा करना जैसे सत्यता, धीरज, शुक्र करना, विश्वास और परहेज़ करना।

४. रूह का रोशन होना

अपने भीतर और बाहर को अल्लाह और नबी صلى الله عليه وسلم की मुहब्बत और आज्ञाकारिता में मिटा दें जिस का परिणाम अल्लाह की नज़दीकी, आनंद, और रूहानी रहस्यों का प्राप्त होना है।

पाकी के चार बताए गए चरणों को पूरा कर के खोजकर्ता का भीतर अल्लाह की मौजूदगी और दोस्ती से रोशन हो जाता है, और फिर वह खुद दूसरों को भी अपने इस मार्ग की ओर बुलाने लगता है।

wiselifeacademy.com

वाइज लाइफ अकेडेमी

सामान्य कार्यकारी: अहमद दब्बाग

WISELIFE
ACADEMY

लक्ष्य सारांश:

ईश्वरीय रौशनी और मानव ज्ञान को अभ्यासिक और अर्थपूर्ण रूप में रोज़ाना के जीवन में शामिल करना और सांसारिक समस्याओं का समाधान करना।

के बारे में

युवा मुसल्मानों के रूप में आज के समय में हम इंसानों के पास ऊंचे स्तर की शिक्षा है और पहले से अधिक जानकारी तक हमारी पहुंच भी है। इस के बावजूद कि हमारी दीवारों पर डिग्रियां सजी रहती हैं और साथ साथ हमारे दिमाग भी ढेर सारी जानकारी से भरे होते हैं लेकिन फिर भी हम अति बुद्धिमान पीढ़ी बिल्कुल भी नहीं हैं। परंतु ऐसा भी नहीं है कि हमारी पीढ़ी में समझ ही नहीं है बल्कि बात यह है कि हम उलझे हुए हैं, जानकारियों के ढेर में यह नहीं जान पाते कि सत्य कहां है और कैसे जीवन के लिए इसे कारगर बनाया जाए ताकि जीवन को समझदारी के साथ स्वस्थ और धनी बनाया जाए।

अब तक के काम

वाइज लाइफ अकेडेमी ने यूके, अमेरिका, डेन्मार्क, और पाकिस्तान में वर्कशॉप्स की हैं जिन में ५०० से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। वाइज लाइफ अकेडेमी ने प्रतिभागियों की १०० प्रतिशत सहमति हासिल की इस तरह कि वे अपने परिवार और दोस्तों को भी वाइज लाइफ अकेडेमी की सलाह दें गे।

wiselifeacademy.com

वर्कशॉप्स

अपने विवाह को बेहतरीन बनाएं रोज़ा; भूक और पियास से परे

अपने विवाह को बेहतरीन बनाएं जिस की निर्भरता इस्लामी सिद्धांतों पर है और इस का संबंध सब जोड़ों से है जो विवाहित होना चाहते हैं चाहे वह इस्लामी परिवार से हों या न हों। इस वर्कशॉप में विवाह के शारीरिक और मानसिक पक्षों के संबंधों को समझा जाता है, मुहब्बत की सच्चाई को तलाश किया जाता है, अपने व्यक्तित्व को क़ुरआन और सुन्नत की शिक्षाओं, आधुनिक विज्ञान, और मनोविज्ञान की रोशनी में परखा जाता है।

रमज़ान इस लिए नहीं कि आप केवल भूके रहें बल्कि इस के माध्यम से आप अपने जीवन के ढंग में सुधार ला सकते हैं और रूहानी तोर पर खुद के साथ जुड़ सकते हैं। इस वर्कशॉप में आत्मशक्ति, ध्यान, और बुद्धि के रूहानी विकास में सहायता मिलती है।

आगे आने वाली वर्कशॉप्स

•लत से मुक्ति
•जीवन की खोज
•पीड़ा से निपटना

> "रोज़ाना की सांसारिक समस्या ओं का समाधान करना"

अपने चरित्र को निखारें

चरित्र विकसित करने के संबंध में यह दो दिन की वर्कशॉप होती है जो इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित होती है। इस में अनोखे ढंग की शिक्षाएं शामिल होती हैं कि किस तरह धीरे धीरे चरित्र के नकारात्मक गुणों को सकारात्मक गुणों से बदलना चाहिए। इस के अलावा इस वर्कशॉप में सुंदर व्यवहार, भावनाओं पर नियंत्रण, मन की सफाई और चरित्र की खराबी जैसे विषयों पर शिक्षा दी जाती है।

१०० प्रतिशत प्रतिभागियों ने वाइज लाइफ अकेडेमी के बारे में अपने परिवार और दोस्तों को सलाह दी।

dabbaghwelfare.org.uk

दब्बाग वेलफेयर ट्रस्ट

संरक्षक – अहमद दब्बाग

लक्ष्य सारांश

मानवता की सेवा करना, दुनिया में समाज के बसने वाले जरूरतमंद सदस्यों, परिवारों, अनाथ लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना।

के बारे में

दब्बाग वेलफेयर ट्रस्ट का लक्ष्य है कि दुनिया भर के गरीब लोगों की सहायता की जाए, उन में सदक़ा और ज़कात को पैग़म्बर की बताई गई शिक्षा द्वारा बांटा जाए। साथ साथ आने वाली आफतों और आकस्मिक घटनाओं से भी निपटने के लिए यूके वर्ष २०११ में एक आजाद एनजीओ की स्थापना की गई थी। दब्बाग वेलफेयर ट्रस्ट जमा किए हुए पैसों का बटवारा एक एप्लीकेशन प्रक्रिया और एजेंट द्वारा करता है जिस की सहायता से दान करने वाले अपनी इच्छा से जहां चाहें वहां पैसों को पहुंचा सकते हैं।

अब तक के काम

इंग्लैंड, पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, सीरिया, फिलीपींस, गाजा, तंजानिया आदि में अपनी सेवाएं दीं जैसे खाना परोसना, सामूहिक विवाह करवाना, पानी के कुएं, पानी की सफाई का काम, आंखों की सुरक्षा, शिक्षा, बच्चों के गिफ्ट पैक, सर्दियों का सामान, विधवाओं की सहायता, इमरजेंसी उपाय, पगार उपाय, पवित्र गृहस्थी, अनाथ लोगों की देख भाल और दावा।

९५ प्रतिशत दान का पैसा जरूरतमंदों तक पहुंचता है

jamiamuhammadiyah.com

यूके अकेडेमी ऑफ़ इस्लामिक साइंसेस

अध्यक्ष – अहमद दब्बाग

लक्ष्य सारांश

अहले सुन्नत वल जमात की सही शिक्षाओं का नियमानुसार और व्यवस्थित ढंग से प्रचार करना और सब जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) के द्वारा शिक्षा प्राप्त करना।

जामिआ मुहम्मदिया का लक्ष्य है कि इस्लाम के अनिवार्य ज्ञान जैसे अक़ीदा (मत), फ़िक़्ह (नियम), तज़वीद (क़ुरआन का पढ़ना) तज़कियाह (पवित्रता) आदि की शिक्षा दी जाए। वैसे तो जामिआ मुहम्मदिया सारे ही इस्लामी विषयों पर शिक्षा देता है लेकिन हमारा मुख्य काम दावत (इस्लाम का प्रचार) और तज़कियाह का है। जामिआ मुहम्मदिया का यह मानना है कि तालीम (शिक्षा) के साथ साथ इस्लाम की अभ्यासिक शिक्षाओं (तरबियाह) पर जोर देना भी अति जरूरी है। केवल इल्म (जानकारी) अकेले ही काफी नहीं होती है बल्कि उस इल्म का सही उपयोग आना भी जरूरी होता है।

जामिआ मुहम्मदिया ने बोल्टन, हाइड, ओल्डम, मैनचेस्टर, एक्लस, बर्मिंघम, लंदन, डेनमार्क, यूएसए और पाकिस्तान में सेण्टर बनाए हैं जहां पर हजारों छात्र फ़ायदा उठाते हैं।

भिन्न भिन्न स्तरों के लिए अनेक कोर्स रखे गए हैं जो हर उम्र के व्यक्ति के लिहाज से हैं। यदि आप अपनी मौजूदा जानकारी को ताजा करना चाहते हैं या शुरुआत से ले कर अंत तक आलिम या आलिमा बनना चाहते हैं तो हमारे पास इन सब के लिहाज से कोर्स रखे गए हैं।

हमारे पास ये कोर्स हैं: अक़ीदा, फ़िक़्ह, उसूल फ़िक़्ह, और तज़्कियाह पर छोटे कोर्स

वर्कशॉप और सेमिनार में कई विषय को लिया जाता है जैसे:
समय प्रबंधन, लापरवाही, वैवाहिक मुद्दों से निपटना, काला जादू, आध्यात्मिक तत्व, घरेलू समस्याएं।

अनदेखे को बेनक़ाब करना

मानवता हमेशा से ही सत्य की खोज में रही है। आज की दुनिया में जब कि बड़ी बड़ी टेक्नोलॉजी और विज्ञान पर आधारित उन्नतियां सामने आ चुकी हैं तो भौतिक जगत और रूहानी जगत में काफी दूरी भी नजर आती जा रही है और यही कारण है कि अब अनदेखे जगत (ग़ैब) और आख़िरत के विषय में प्रश्न उठाए जाते हैं। कई सारी परम्पराएं गुजरी हैं जिन का आध्यात्मिकता पर विश्वास रहा है और इसी के माध्यम से जागरूक, उद्देश्यपूर्ण और सकारात्मक गुण उन के जीवन को प्रभावित करते रहें थे लेकिन अब यह सार हमारे जीवन से जाता जा रहा है।

अक्सर इस क्षमता की कमी हमें बर्बादी की ओर ले जाती है। लोग खुद को अजनबी महसूस करने लगते हैं और यह रूहानी कमी उन्हें अति निराशा में धकेल देती है। ऐसी ही समस्याओं से निपटने के लिए रूहानी शिक्षा के कोर्स विकसित किए गए हैं ताकि प्रतिभागियों को आध्यात्मिक रस से परिचित किया जाए, इस धारणा के तीन स्तर नीचे बताए गए हैं।

इस प्रकार से मानवता की रूहानी जरूरत को नियम अनुसार और सोबर तरीके से पूरा किया जा सकता है, प्रतिभागियों और अल्लाह جل جلاله में संबंध बनाया जा सकता है और प्रतिभागियों को जीवन के विराट लक्ष्य से परिचित किया जा सकता है।

इस धारणा के तीन स्तर

१. इल्म अल यक़ीन (अक़ीदे की जानकारी)
" यक़ीन की जानकारी" (१०२:५)

२. ऐन अल यक़ीन (दीखते पर विश्वास)
" देखने का यक़ीन" (१०२:७)

३. हक़ अल यक़ीन (विश्वास किए का अनुभव करना)
"यक़ीन की सच्चाई" (५६:९५)

विभिन्न प्रकार के मुराक़बे (ध्यान)

मुराक़बा ए मेराज - रूहानी नगरों में प्रवेश करना और मदीना मुनव्वरा, मक्का अल मुकर्रमा, मस्जिद अल अक़्सा, सातों आसमान, बरज़ख़, सिदरतुल मुंतहा की रूहानी यात्रा करना ताकि ग़ैब (अनदेखे) पर आप का विश्वास पक्का हो जाए और हमारे जीवन में इस मार्गदर्शन का प्रभाव दिखे।

मुराक़बा ए बरज़ख़ - इस रूहानी नगर में दाखिल होना इस इरादे से कि बरज़ख़ (क़ब्र) की स्थिति पर पक्का विश्वास बन जाए। इस तरह प्रतिभागियों को बरज़ख़ की एक झलक मिल जाती है और उन के विश्वास को पक्का कर के उन को शरीअत से जोड़ देती है।

मुराक़बा ए मोहम्मदिया - रूहानी नगर में दाखिल होना और नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत करना। इस प्रक्रिया में प्रतिभागियों को कई परीक्षाओं से गुजरना होता है और आखरी स्थान पर वे सब से बेहतरीन व्यक्ति सय्येदुना मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत कर पाते हैं।

मुराक़बा ए दुआ - अल्लाह جل جلالہ के साथ जुड़ना और शारीरिक, मानसिक, दिली और रूहानी तोर पर अल्लाह جل جلالہ की मौजूदगी का एहसास करना। अल्लाह جل جلالہ के साथ एक अर्थपूर्ण और गहरा संबंध रखना और अल्लाह جل جلالہ से अपने पापों का प्रायश्चित करना, उस की नेमतों का शुक्र अदा करना, अपनी जरूरत को अल्लाह के आगे रखना, अपने जीवन के लिए मार्गदर्शन मांगना और परिणाम के लिए केवल अल्लाह جل جلالہ पर ही निर्भर होना।

२ से ४ दिन के समय में रूहानी मुराक़बे कराए जाते हैं जहां पर प्रतिभागियों को नौसिखिया स्तर से लिया जाता है और अनदेखे जगत का अनुभव कराया जाता है। इन सब प्रतिभागियों में गांव देहातों के लोगों से ले कर यूनिवर्सिटी अधिकारियों तक सब शामिल होते हैं।

सलाह और मशवरा

मुराक़बा ए मोहम्मदिया के अध्यापक, अहमद दब्बाग, निजी तोर पर खुद मुफ्त सलाह और मशवरा देते हैं, लोगों को ध्यान और हमदर्दी के साथ सुनते हैं और इस के लिए अपना समय लगाते हैं और सलाह के साथ साथ उन का आदर भी करते हैं और सम्मान देते हैं।

उन का लक्ष्य है कि लोगों को मुफ्त सेवा दी जाए ताकि वह ज़ीवन का लक्ष्य पहचान सकें और उन को आज के वक्त में नबी की शिक्षाओं का अभ्यासिक पक्ष आधुनिक वैज्ञानिक रूप में बताया जाए।

क्योंकि हज़रत इस्लामी और सांसारिक दोनों तरफ के अनुभव रखते हैं इसी लिए लोगों के लिए उन के मशवरे और सलाह भी उसी अनुसार हुआ करती हैं। इस का संबंध जीवन के सब क्षेत्रों से होता है जैसे निजी जीवन, सामाज, शिक्षा, इस्लाम, पारिवारिक जीवन, आध्यात्मिक और संस्थाओं के प्रशासनिक कर्तव्यों से भी इस का संबंध पड़ता है।

उन की निस्वार्थ सेवा ने हज़ारों लोगों की सहायता की है जिस से उन लोगों को भी जीवन के कई क्षेत्रों में आगे बढ़ने का साहस मिला और इसी का परिणाम यह हुआ कि उन की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लोकप्रिय भी बढ़ी, रात रात भर तक लोग उन से सलाह प्राप्त करने के लिए क़तर में लगे होते थे। बल्कि विदेश से लोग उन से सलाह और मशवरे लेने के लिए आते हैं जिन में पाकिस्तान, मलेशिया, इंडोनेशिया, मोरक्को, डेनमार्क, कनाडा, अमेरिका आदि जैसे देश शामिल हैं। इन की यही सब सेवाओं से उन की बड़ी कोशिशों का पता चलता है।

सलाह और मशवरे के लिए यह मुफ्त सेशन केवल समय और किसी खास जगह तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वह ईमेल, फ़ोन कॉल और मैसेज में भी लगातार जवाब दिया करते हैं। जब वह सफर में होते हैं और दुनिया भर में पैग़म्बर की शिक्षाओं का प्रचार कर रहे होते हैं तो अपने खाली समय में वह सलाह और मशवरे की सेवा देते रहते हैं।

मुफ्त इलाज के सेशन

मुफ्त सामूहिक इलाज के सेशन का लक्ष्य यह होता है कि एक ऐसी सेवा दी जाए जहां नबी की शिक्षाओं द्वारा शारीरिक, मानसिक या रूहानी बीमारियों का इलाज किया जाता हो।

मानवता में बीमारियां के कारण लोग खुद को परिवार में या अपने प्रियजनों से दूर निराशा में खोया हुआ देखने लगते हैं। ऐसे में भावनाओं के जोर में लोग अक्सर दूर भी निकल जाते हैं जो उन को शरीअत की सीमा से परे ले जाता है।

इस इलाज के सेशन से यह खला भर जाता है और प्रतिभागियों को जो खुद को बिल्कुल निचली स्तर पर महसूस कर रहे होते हैं उन को रूहानी सहायता और अभ्यासिक तरीकों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान मिल जाता है। हम पूरी तरह एक अल्लाह جل جلاله पर ही निर्भर हैं और वह "अश शाफी" है जिस का अर्थ है शिफा (इलाज) देने वाला।

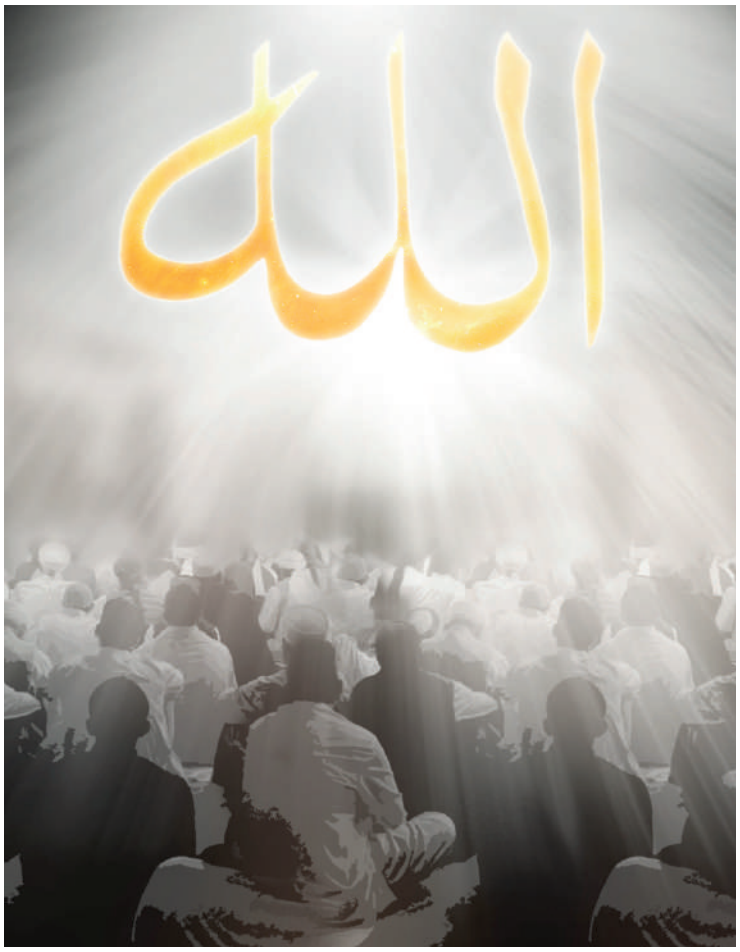

प्रतिभागियों में बीमारियां भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं और इसी लिए हर एक से अलग अलग मुलाकात की जाती है ताकि हर व्यक्ति अकेले में अपनी स्थिति सामने रख सके। यह सब बिल्कुल शरीअत के अनुसार होता है जिस में महिलाओं ने अपने मेहरम के साथ आना होता है वरना मुलाकात की अनुमति नहीं मिलती है।

अहमद दब्बाग की पुस्तकें

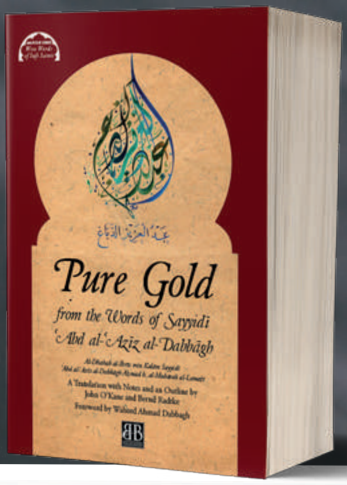

सय्यिदी अब्दुल अज़ीज़ अद-दब्बाग के शब्दों द्वारा शुद्ध सोना की प्रस्तावना अहमद दब्बाग ने लिखी थी

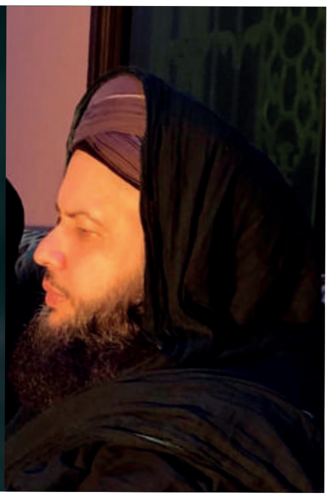

अल्लाह □□□□□ □□ की ओर आनंद और नजदीकी की यात्रा कई भाषाओं में प्राप्त है जिन में अरबी, उर्दू, तुर्की, फ्रेंच, स्पेनिश, मलय, डेनिश, बांग्ला, इटालियन आदि भाषाएं शामिल हैं।

अहमद दब्बाग की लिखी पुस्तकें कई भाषाओं में मिल जाती हैं ताकि दुनिया भर में इस का फायदा उठाया जाए।

अहमद दब्बाग

यूके अकेडेमी ऑफ़ इस्लामिक साइंसेस के अध्यक्ष और वाइज
लाइफ अकेडेमी के प्रधान अध्यायक

zawiyah.org

prophetic-path.com

facebook.com/ShaykhAhmadDabbagh